अकथ कहानी

अकथ कहानी

विनोदचन्द्र पांडेय



राधाकृष्ण

आवरण
चंचल

पहला संस्करण
1986

मूल्य
40 रुपये

प्रकाशक
राधाकृष्ण प्रकाशन
2/38, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110002

मुद्रक
नागरी प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

क्रम

अकथ कहानी

एक प्रतिशत

सेन-रु

भाग्य का टीन

अकथ कहानी

ओ क्षीरसागर

ओ क्षीरसागर
किस वेग से आईं
मेरी ओर

ओ श्वेत वादल
छाई रही
मेरी नील गहराई पर

जिस भ्रम से रुकी रहीं
सुखी मुझ पर एकाग्र
मेरा आत्म है वही
मेरी मुझमें सच्चाई

वंशी-स्वर

कल बारिश आई
बिजली के हुए वार पर वार
वंशी-स्वर दूर का
पड़ा सुनाई और भूला नहीं
बज रहा है रात्रि में बाहर कहीं
या तरसते श्रवण ने गूंज बनाई

क्या यह परिवार के पार
जो व्याकुलता जीवन में आई
क्षणिक लगी हो गई स्थाई
मुझमें कुछ नया खोज
हृदय में स्थापित करती

मंदिर

सजीवता
  बाहर से मिली
मंदिरों में
पर्वत-क्षेत्र में यात्रा करते

सजीवता
  हर सुबह आ गई
तुम्हें देख
  तुम्हारी बातें सुनते

सजीवता को सदा रखने
एक मंदिर खोजें
साथ रहने
  पर्वतों में

सिंह लग्न, वृष राशि

यदि मैं अंत हुआ
अग्नि की तरह
सिंह लग्न मेरा
तो जला जाऊँगा दुख
जो मैंने तुम्हें दिया

यदि मैं अंत हुआ
धरती की तरह
वृष राशि मेरी
उपवन में खोजना मुझे
बड़े पेड़ों के नीचे

जन्मदिवस

एक किताब
एक हनुमान की मूर्ति
और इनमें छिपी समाई मैं
जन्मदिन के उपहार तुम्हें ।

क्यों नही पैदा हुए निकट
तुम क्यों आगे आ गए
मुझे आने में देर हुई
इतने वरस

जो मन में आया

जो मन में आया
वह मैंने गाया
कभी तुम्हारी देह
कभी मधुर मन
अब दीखती है आत्मा
एक बढता घटता चन्द्रमा
उसी की सुनाता कथा
आधी हँसी आधी व्यथा
अपने प्रेम की गंभीरता
मन नही सह पाता
तब लालवुझक्कड़ होकर
तुम्हें रुला डालता

खिड़की का पीपल

तुम्हारे जीवन में
क्या हो पाऊँगा
कभी खिड़की के पीपल से ज्यादा

पुरुष-स्त्री पुरुष-स्त्री
चीखती गई चिड़िया
मैंने तो देखा ही नहीं
तुम्हारी आँखों के नीचे

लक्ष्मी

वह क्या देगी शांति मुझे
कल की लड़की
दो आँखें एक नाक एक मुख इत्यादि

उसके रूप में झलकी
            मेरी आत्मा की लक्ष्मी

जब खो गया आत्म अनुभव
हृदय-सागर मथकर
रत्न निकालने वाली
यह लक्ष्मी नाम की लड़की

होता है

बिना टाँग आँख हाथ
जीवन जी लेते कई
बिना दिमाग सूना हृदय
मैंने देखे हैं बड़े-बड़े
जीवन में पाए अगुवाई
सुख के बिना
        जीते गरीब और तपस्वी
हम एक जिए दो भाग हो
आपसी बातचीत की सांत्वना खो
        इसमें क्या अन्याय क्या अनहोनी

सूक्ष्म तीर

आज इतना शांत प्रेम
मन में भरा
मैं छोड़ सकता हूँ तुम्हें
मैं छोड़ सकता हूँ जीवन ही
ऐसा सूक्ष्म तीर
हृदय में लगा



वह मेरे पीछे चल पड़ी
अपने हृदय में कोई
उसे नई राह मिली

जो इतनी सुखी थी
होने में सुन्दर सुख मिठाई
अपने कंचन को अकिंचन मान
समर्पित होने वही

सुबह

परिवार का भरसक उपवन
सुगंध की सीमा क्या बांधेगा
मुझे प्रतीक्षा हो गई
एक चिड़िया आकर गाएगी



अभी सुबह है
कोई नहीं उठा
मैं निर्द्वन्द्व—तुम्हारे बारे में
सोच सकती



एक झाड़ी गुलाबी फूलों की
सुबह से हवा में झूम रही
वही खड़ी कहीं नहीं गई
नृत्य में व्यस्त हुई

नहीं होना

जीवन सूना
क्योंकि उससे सूना
दुख का होना
एक न-होना

एक खालीपन से भरा
मेरा मन खाली रहता
क्या हुआ—कुछ नहीं
कुछ नहीं होना
जो होता रहता

जला पेड़

मन का जला पेड़
इसमें कौन चिड़िया उतरेगी
सुख पाने सुख गाने

2

वह गई विदेश
और दिल्ली काटने दौड़ी

3

मेरे जीवन में अटी वटी
एक गोराई रस्सी हुई

4

कोयल पूछती प्रश्न
खो दिया हृदयरत्न
पूछती प्रश्न

5

शिशिर करता बंद बंद बंद
आकर खोलेगा वसंत वसंत वसंत

धूप का नशा

शायद फरवरी लाए
नया वसंत का नशा
अंत हो जाए अवधि
मन जेल में पड़ा

मैं तुम्हें लेने आऊँगा
जब मुझमें होगी कविता



कुछ तुम्हारा जैसा
कुछ मेरा जैसा
यदि मैं बनाती बच्चा
लड़की या लड़का

धूप में बैठे
मेरा गर्भ भर जाता
ऐसी कल्पनाओं से

असली

शांति है हार मान लेने से
न मैं वह था जो उसने माना
न वह थी जो मैंने की कल्पना
मैंने जो असली हाथ पकड़ा
क्या मैं चाहता था वही पकड़ना
असली खेल था नकली खेलना

हिम ढकी ऊँचाई

मैं जानता ही नहीं
वह हिम ढकी ऊँचाई
जहाँ अपने में मुझे
तुम्हारी पूजा ले गई

पूर्ण

पूरा खिला फूल
पका फल
पूर्ण स्त्री
रहोगी कितने काल

अपने रोग के सँवारे रूप से
निर्वसन तुम अधिक थीं
सुख को पूर्ण करता
देह का अहं अपना
जिसमें पहचाना सुख
एक भाग था

झरोखे

गृहस्थ-पटु बच्चों में रमी
धक्के देती और लेती
उसके रूप ने उठा ली हैं
नई भोली मुद्राएँ

बालिका में माता
और माता में स्त्री
और इन तीनों झरोखों से
प्रेमिका झाँक रही

घुल

क्या शिशु-इच्छा है प्रेम
मैं तुममें घुल कर रहना चाहती
जैसे लहर में उमड़ा नीला रंग
ऊपर उठती गिरती

तुम्हारी स्त्री

उम्र उतर गई
कपड़ों के साथ
किशोर को किशोरी
सुना रही बात

तुम पुरुष मैं तुम्हारी स्त्री
अब यह बात ही सच बची
जहाँ ले जाए भाग्य
नाव खोल दी गई

काले बादल

काले बादल में दृष्टि अटकी
जब वर्षा खिड़की पर बरसी
एक श्वेत अंग याद आया
और वासना सलेटी

सुख

तुम्हारा रूप है
　　बहुत बड़ा भाग
तुम्हारेपन का

यह लो वापिस
　　हवा में उछाला
तुम्हें जीवन में सुखी देख
मैं हुआ मुक्त
लो वापिस लो
　　प्रेम की माला

त्यागे सुख का फिर उठाना ?
मैं पहनी बैठी हूँ
　　प्रियतम का प्रेम
कीचड़ मे गिरा टका
मुझे झुकाएगा क्या

पलड़ा

यदि भाग्य के पलड़े में
तुम मेरी ओर बैठ जातीं
यह जीवन उबरता—या इसकी
जर्जर नाव डूब जाती

2

श्वेत कमल दिन
तुम्हारी गोदी में पड़ा
मुझे दफ्तर जाना
और कुछ दिन में मरना

जादू

सफेद जादू प्रेम का
काला जादू काम का

मैं प्रकट करता अकेलापन
रात्रि भर इच्छा तुम्हारे लिए
यह काला जादू काम का
मैं डूबता अपनी यमुना में
और तुम्हें खींचता

मैं वसंत सौंदर्य से मुग्ध
पाता सजीव हुई सलिला
प्रेम की गंगा में डूब
तुम्हें बुलाता खोज लो
अपने में प्रेम-गंगा

काली यमुना है सदा
गंगा है अधिकतर अदृश्य
किसी का रूप—वह ऊँचे हिम
मन धरती तक लाता

सौंदर्य सरकार

तुम्हारे ठहरे रूप का कारण
तुम्हारा विश्वास अपने रूप में
जीवन भर संग्रहित जन-मत
सौंदर्य सरकार बनाए रखता



तुम्हारे जाने के बाद
ऐसे संतोष में सो गया
जैसे कोई प्रेम का निश्चय
हमारे बीच हो गया



तुम हर ढंग से सुखी
प्रेम रोग क्या पालतीं
अपने सुख की प्रतिरक्षक
मन में चोर पकड़ फिर छोड़ती

देह से दूसरा

•

कुछ हो अपनी
कुछ तुम में देह से दूसरा
यह नाक यह ठोढी
यह आधी-आधी आँख
तुम्हारी निधि

कुछ जगमगाता और मधुर
अभी सम्मुख अभी लुप्त
भीतर कोई उदार देता
इस भाग पर वश नहीं तुम्हारा

तुम गिनती हो
त्वचा के गुण
लम्बे बालों की प्रचुरता
सौंदर्य-धन के लिए प्रसाधन इतना
अपने में दिव्य की
अपेक्षा इतनी

कौन मीठा

जो पाया
　　　　या जो हृदय में आया
किस प्रेम को मानती हो अधिक

रूप-माया की प्राप्ति
　　　　या अहं मुक्ति
सुख ज्वार कहाँ तक पहुँचा
पाने और देने का स्वाद
कौन अधिक मीठा

किसने

किसने जीता तुम्हे
जिसने प्रथम पाया
या विस्तार से विवाहा
जो आता जाता रहा
अभी कभी तुम्हारा हृदय
कोमल कर सका

जिसने तुमसे सुख
पुष्प-सा संकलित किया
जो खडा रहा बाहर
जो रोज आया
पहली अवस्था में मिला
पूर्णता में पाया

मूलाधार हिला जब
स्वाधिष्ठान में प्रारम्भ

आज्ञा में ज्योति
विशुद्ध में छन्द
अनाहत में पुलक
और कम्पन

किसके प्रति बनी इच्छा
अपने को देने की
और वढ़ती गई
कहाँ तुम्हें दुख रहा
दिया पर देना पूर्ण न हुआ

हँसता प्रहरी

1

मन का दुर्ग अविजित
प्रेम ने फहराई ध्वजा
नीला आकाश पताका पीली
एक ही बचा हँसता प्रहरी

2

मैं उसका हूँ—अभी हुआ कहाँ
रोज अधिक होता हूँ
मेरापन लंबी धारा
मैं हल्का हुआ
मेरापन जितना गया

साथ

मन से फिसलती हवा
आज रुक गई

क्या साथ रहने से कम
निभा सकेगा यह प्रेम

चारों ओर से उमड़ती
मुझ पर तुम तुम तुम

अभी देह की धवल मूर्ति
अभी मन का मधु मधुर

साथ नही रह पाए यदि
नित्य होगी हृदय अवनति

कनाट प्लेस

कनाट प्लेस की भीड़
मैं नहीं उल्लासित
सुख उत्सुक होता
मन कन्दरा
पेड़ों का साथ खोजता

एक भीड़ में खड़ी
अतीव सुन्दर लड़की
इस उम्र में इससे भी
तुम सुन्दर थीं

बीज

1

क्या पीपल बीज था
जो उगता ही गया

2

क्षीर सागर में तैरती
अप्सरा प्रेम से झुंझलाई

3

जो कहानी थी
हमारी अपनी
उसमें आ गए बहुत लोग

4

बिना हृदय कूटे
कहाँ राह बनेगी तुम तक

5

तुम्हारे पूर्ण रूप के अंतिम वर्ष
कह रहा केशराशि का विप्लव

6

बारिश झेल कर साथ
ओस की प्रतीक्षा करना

नहीं

नहीं कहती है रात्रि
प्रेम की ज्योति बुझ गई

नहीं कहता सवेरा
कूकते पक्षियों का घेरा

समय व्यस्त और बह रहा
हम पर निश्चय सुना चुका

स्वधर्म

मेरे स्वधर्म में है
भागवत पुस्तकें पढ़ना
कविता लिखना
कल से अधिक आज
तुमसे प्रेम करना

धरम करम

धरम करम बैठे हैं
सारी सीटें घेरे
इधर-उधर जगह खोज
बाहर जाती है मूक
प्रेम की जोड़ी

इन सबके पास टिकट
मैम्बरशिप अधिकार-पत्र
इन्होंने खटा और पाया
सिर्फ़ चन्द्रमा देखते
समय नहीं गँवाया

सड़कें पक्की कीं
गरीबों को मजदूरी दी
घात लगाए रहे
हर मौके पर थोड़े बढ़े

युवामन काईया
मध्यावस्था धूर्त
पब्लिक इनके ठेके में पड़ती
इसलिए इनकी बात सुनती
प्रगतिशील सरकार

टुकड़े

1

सब बीते प्रेम
तुम्हारे वक्ष में मिले

2

वही सौंदर्य
मोटे अक्षरों में लिखा हुआ

3

यदि उसने यही चाहा
मैं अंधा जिऊँ
रहूँगा आँख मूँदे

4

बाधाएँ हट गईं
पर मेरी ओर आती राह
खाली रही

5

क्यों किसी अनुपस्थित की ओर मुड़ते
जीवन-राह काटनी
अपने बल पर ही

अधूरे, अदिव्य

1

मेरी राह से हटो प्रेम
    हृदय-विदारक
तुम नहीं सुलझा सकते
संसार चक्र
न उससे ऊपर ले जाते

2

प्रेम तुम क्या देवता
तुमसे पाना यहाँ
    छीना जाता कहीं और
क्या तुम्हारी कृपा
    अधूरी अदिव्य

हारे खारे दिन

हारे खारे दिन जा चुके
क्यों विचलित करती उनकी स्मृति

नीलाम नाम संपत्ति
प्रेम समृद्धि से निर्वासित
जीवन-कुटी वनाई
यहाँ क्यों उन निराशाओं की
शीत हवाएँ वह आईं

एक प्रतिशत

शृंगार सभा

मन की शृंगार सभा से उठ
पंडितों और ज्ञानियों का सत्संग छोड़
मैं गया निकुंज में अकेला
शीतलता ने देह छुई
आत्मा निकट बहती हुई

सूची

मैंने सिर नवाया
अपनी आत्मा को
उसने सूची दी

जो काम निपटाने है
कोई मंत्र नहीं दिया
न शांति की सिद्धि

रोज की घास
काटता हूँ रोज
आत्मा को सर नवाता
मिल जाती सूची

शालीन

कोई ज्ञान वाक्य नही
    न कोई बीज मंत्र
पेडों का गंभीर
    शालीन जीवन व्यापन
मुझे सहने की शिक्षा देता

निराशी

मन ठीक हो गया
      निराशी बन
मंत्री चलें अपनी चाल
प्रेमिका निभाए अपनी मर्जी

यह गर्व का ढव नहीं
न खेल के वाहर आना
पारितोषिक और परिणाम छोड़ो
जीवन से ढीले वैठो

दुख माया

फिर भी कहते मुझसे
हृदय में बैठे देवता
दुख है भ्रम और झूठा
रहो हलके हर्षित सुखी

इससे बढ़िया नहीं
कोई दिन पूर्व से आया
झेलो या झुको
या हर्ष में उठो
यह मन की माया

चट्टान

आँसुओं की वर्षा से
कितनी अहं-चट्टान कटेगी
रोज उठती ग्लानि से
        क्या यह गलेगी
जिस गुरु के पास बारूद
वहाँ ले चलो

आकाश जैसा

आकाश इतना बड़ा
ऊँचा रहता खड़ा
तारे निकलते
      अपना खेल जमा
फिर ढलते

सूरज आ बढ़ा
आकाश प्रकाश हो गया
बादल आए और बीते

आकाश रहा
जीवन की साँस के परे
दूर से दूर
निकट भी इसलिए

कुछ मुझमें भी
      आकाश जैसा
दिवस रात्रि के खेल
बीत जाते
स्थित शांत अविकृत

ऋषिकेश

जुलाई की प्रतीक्षा थी
जुलाई ने मृत्यु ला दी
पहुँचाया ऋषिकेश क्षेत्र
प्रेम की अस्थियाँ बहाने



वहाँ देवता रहते हैं
श्वेत श्याम बादल पहुँचे हैं
उस पर्वत-श्रेणी को एकटक
पराजित प्रेमी देखते हैं



मन नही बूझा
एक घाव है भीतर
मेरी आँखों का चश्मा
जब पूजा के लिए झुका
गंगा में गिरा

प्रेम-विज्ञान

1

उत्तर नहीं है तूफान
छोड़ना यह प्रदेश
     जिस घाटी में फँसा
मेरा भाग्य सुलझाएगा
अपने में चढ़ना
ऊँचाइयों में रहना

2

यह घटनाएँ
     मिट जाएँगी मन से
पर इनसे सीखा
     प्रेम-विज्ञान
जीवन बदलेगा

क्विगजोट

1

मैं हूँ डॉन क्विगजोट
मन के नाटक
जीवन में उतारता
अभी उत्साही अभी उदास
भीतर की कथानुसार

2

मैं संन्यासी योगी नहीं
निर्बल अस्वस्थ कुछ मूर्ख
संसार से ऊपर नहीं
कुछ नीचे
मुझसे नहीं निभाई जाती
जीवन की मोटी भार्य्या

उपवन शांति

भूख भय हर्ष से
　　बोलती चिड़ियाँ
पर इस उपवन में रची हुई
　　शांति आत्मा छूती

ऊँचे दाम

इच्छा स्फीति
      बीते दिनों की
और अकाल घिरा
इतने ऊँचे सुख के दाम पहुँचे
शांति हुई कठिन

महीन स्वर

एक महीन स्वर बोल
दुहराती उसे ही
सुबह भर अथक
इन पेड़ों में कहीं

क्या कोई एक बात
मैं भूल रहा हूँ

कुछ उधेड़ा हुआ सी रही
कुछ सिला उधेड़ रही

अभी बात सुलझी नहीं
वह उड़ गई

रूखा-सूखा

1

रूखा-सूखा सही
मैं हूँ यही और यही

2

स्त्री पुरुष व्यापार
अब नमस्कार

अहं का नशा नहीं
अहं की दवा

3

चलो विदा
खुशी भी रही
और दुख भी रहा

किताबें पढ़ा

मेरा हाथ उठा हुआ
मैं जानता हूँ उत्तर
मेरा सिर झुका हुआ
प्लेटो का सत्य चालू नहीं
        मेरे ऊपर

मैंने जैन सूत्र पढ़े
बहुत हर्ष से
संसार को कहता, असत्
तुलसी जैसा सन्त
दिव्य सत्य

रूखा-सूखा

1

रूखा-सूखा सही
मैं हूँ यही और यही

2

स्त्री पुरुष व्यापार
अब नमस्कार

अहं का नशा नहीं
अहं की दवा

3

चलो विदा
खुशी भी रही
और दुख भी रहा

ताओ

जिस प्रेम के बारे में
      बोला जा सकता
वह नही शाश्वत प्रेम
जो नाम लिया जा सकता
      वह नहीं है उसका नाम

धरती और आकाश का
प्रारम्भ था वह अनामा
नाम माता हुई
हजार चीजों की

मुट्ठी में

1

उस मुट्ठी में क्या
वही जो तुमने भी छिपा रखा
कुछ नहीं
सच मानो कुछ
मत मानो कुछ नहीं

2

मैं तीर-सा
आकाश पर बढ़ता
कुछ चाहता था
धरती पर

3

झूठ से छूट
ज्यों ऊर्जा छूटती
दूसरे झूठ से झट
बाँध देते उसे

4

गौरय्या केना के फूल पर झुकी
अरे वह पूरा फूल ही
तोड़ ले गई

बाइबिल से

प्रेम का सत्य विपरीत
जिनके पास है
    दिया जाता उन्हें
जिनके पास नहीं
उनसे वह भी ले लिया जाता

भविष्य

1

पेट और भूख के दम पर जिए
अब बैठ गए दोनों बैल
अब हृदय चक्र में चेतना लाओ
सजीवता बने

2

एक फूल पेड़ पर
प्रश्न की तरह उगा
मैं दृष्टि न हटा पाता उससे
क्या वह देख रहा मुझे

3

जितने पेच भविष्य में पड़ सकते
मैं नहीं निबट सकता सबसे

धुन

सब अपनी धुन में लगे
सब की धुन धन या सुख की
मेरी धुन मन हल्का करना
प्रेम-व्योम में उड़ना पंख बिना
कहाँ इस साधना में साथी
कहाँ मिलेगी ऐसी उस्तादी

मेरी प्रज्ञा पारमिता

मेरी प्रज्ञा पारमिता
मेरी दिव्य को द्वार
वातायन जिससे आकाश दीखा
मेरेपन के पार

मैं मुझे और मेरा
इन तीन राक्षसों का डेरा
हाँ के लिए पथ
ना से हो कर जाता

प्रेम से पाया और पकड़ा जाता
बुद्धि से कभी नहीं

सुंदर हँसमुख ज्ञानी

ज्ञान पाया
    हृदय खाली
हृदय भरा
    अ-प्रज्ञा चली

प्रेम की सभा में
    पहली बार मिले
सुंदर हँसमुख ज्ञानी

प्रेम की पुलक
    जगाती सुप्त आत्मा
सूक्ष्म का स्पर्श मिलता

मेरी प्रेमिका की नासिका
समझा देती वेदान्त
उसकी आँखें
उन्मीलित करतीं
    गीता-रहस्य

अपने का जब्त

अपने का जब्त
अपने को रोकना ज़रा
एक मधुरता आती
कुचलने पर आकुलता
चुप रहने का नया शौक
बातून जीवन पश्चात

मेरा मन रहे छरहरा
मैं न होऊँ
बहुत इच्छाओ के परवश

जो जरूरी—वह निभाओ पूरा
बिना इधर-उधर देख
हनुमान करेगा हल्का
उड़ने वाला देवता

प्रेम-केन्द्र

सुरत तो हर जोड़े का सुख
और जोड़े हैं असंख्य
हर तरह का ऊटपटांग
उन को हो रहा उपलब्ध

प्रेम है दूसरा नशा
सौंदर्य अपने बाल खोल रहा

तुममें कुछ अछूता छूने
ईजाद हो रही नई भाषा

प्रेम कहीं संसार में नहीं
घूमते संसार की प्रेम धुरी
कोई लीक और रेखा नहीं
फिर भी केन्द्र बिलकुल सही

सेन-रु

खेल-रू

ठोकर उपयुक्त

जिन स्वभाव से जिया
अब दुख के कारण बने
बाकी जीवन के लिए
यह मन छोडना

धन मिलने पर सहल हुआ
धन बढ़ने पर कठिन
सत्ता से जीवन बढ़ा
फिर सत्ता रखने का बंदी बना

मेरे पाने के कुछ कलुष
हर उपहार से बढ़ा फिर छोटा हुआ
मुझमे कुछ चाण्डाल
और ठोकर उपयुक्त

मूर्ख निर्णय

न झिझको न झुंझलाओ
मूर्ख निर्णय पारित होंगे
गधा हँसेगा
      रोएगी कोयल
संसार है उलटा खड़ा
सीधा हो नही सकता
इसलिए कलाबाजियाँ खाता

जो तुम्हें आक्रांत करता
      राक्षस दीख रहा
कहीं और है बेचारा

अड़ना तो है
      हे हनुमान
मैं वहाँ अड़ूँ
जहाँ सत्य का पक्ष हो

सचिव

सब दिशा फैला स्वास्ति
हम चाहते राजस्व में उन्नति
त्रिकोण बना मंत्री देते
सचिव का काम
        वृत्त बनाना उसे

सिद्धांत के खिलाफ माँग
माँग को दिखलाना सिद्धांत
विपम है सम विरोध सहयोग
यह सचिव का मंत्र और मनोयोग

जब विलकुल लूट हो
कोई शब्द तंत्र न सूझे
तो अंतिम झूठ लिखो
"सरकार के वृहत्तर हित मे"

सुदर्शन चक्र

मेरा मन कुल्हाड़ी चलाता रहता
मुझसे बच कर चलो
मैं गंभीर संगीन
"तुम्हारे लिए
यह अंत है बंधु"
मेरी आज्ञाओं का सुदर्शन चक्र
दैत्यवध रत

जो विरोधी मेरा
वह दैत्य असुर राक्षस
सुदर्शन चक्र अलग करता
सर और धड़
मै सुदर्शन चौपड़ा
असली में सुदर्शन चक्र

नार्थ ब्लाक

1

शांत रहना
विरोध प्रकट न करना
हाथी खा रहा सिंह
चुप रहना

2

भला करना ठीक है
पर भला नहीं माना जाएगा भला
जब तक भली भाँति
भला न प्रचारित हो भला
प्रचार की लागत के बिना
भला नहीं है भला

3

आर्थिक सलाहकार
डाक्टर जालान
    मंत्री-प्रिय
यदि दवा लगती कड़वी
दे देते होमियोपैथी

4

कौन रोक सका
    मंत्री और उनकी मंशा
इन्हें चाहिए वाहवाही
देश की भले सतत तबाही

हनुमान बजरंग बली
मेरी बात हो या नहीं
मुझे लौटा दो लापरवाही

राक्षस जात

जिससे मिलो
      वह मामूली दुख का शिकार
अपने से आगे बढ़े
      अपने से नीचे फँसे

सब करुणा के पात्र
जो दीखते राक्षस जात



जानवर के पाँच स्वर काफ़ी
रंग भंग नाच ठुमरी
ताक पर रख दो डिक्शनरी

वृद्ध राक्षस

स्त्री चाहती सत्ता
धन और सफलता
मैं बुढ़ापे में
आकर्षक हो गया

परस्पर लाभ
जितनी वात वढ़ा सकता
क्या वढ़ाएगा परस्पर प्रेम
वह रईस दलाल
यह फटेहाल

स्त्रियां चमक रही है
लाभ खोजने अपना
स्वर्ण जो प्रेम जैसा लगता
प्रेम से वढ़िया सौदा

मनुष्य वन
        जो रहा दुर्लभ
राक्षस बन कर
        हुआ सुलभ
क्या प्रेम के कठिन जीवन से
यह पाप-मार्ग नहीं सरल

माया उड़ गई

कल्पना का व्यूह
कल्पना का युद्ध
कल्पना में विजय
कहाँ है मेरा जीवन
आ गई असली मृत्यु



धरती धँसी नही
हवा उड़ नही गई
आकाश अपनी जगह पर ही
मुझे क्यों लगता
कोई सहारा नही

लीला

जो दूर से दीखती
लहरों पर लीला
वह निकट से है
        कठोर जीवन-व्यापन
मधुओं का

जय बजरंग बली

जय बजरंग बली
मुझसे अन्याय न हो कभी
अपनी धुन में चलने वाले
किसी को कुचल न डालें

मैं जय हनुमान जी बोला
और आगे चल पडा
निकटता की सिद्धियाँ पाने
लम्बा भोग न हुआ

परिस्थितियाँ

1

साँप क्यों काला ज़हरीला है
यह साँप के कर्म जानें

2

रामजनम बढ़ई-भगवान—भक्त
जीवन भर बढ़ई देखा
बनाए लोगों के घर-द्वार
न आगे सीखा न आगे बढ़ा
बढ़ई जन्मा बढ़ई मरा

3

बुद्धि हृदय परिवार में
लिंग को लाना
लिंग छोड़े पहले
इस्लाम अपना

जुखाम

बाहर धुन्ध
बुद्धि कुन्द

फोन मृत
हृदय हत

ऐसा जुखाम
जीना हराम

प्रेम, दीखता दूर
थकाई अथाह

यह बुरी परिस्थिति
तो सुधरेगी
पर कितनी

अपनी कब्र में लेटो
उसे मत घसीटो

किशोर : वसन्त शिशिर

अः हा वसन्त
शिशिर भगन्त
फूल खिलन्त

अः हा वसन्त
पुरुष-स्त्री भिड़न्त
मधुर लीला करन्त

सब अच्छा लभन्त
मन चार ओरों उड़न्त
वाह वाह वसन्त



बाहर है शिशिर सागर
बंद मकान के भीतर
हम पनडुब्बी में
देखते खिड़कियों के बाहर

फूहड़

डाक्टर नही डेनटिस्ट बना
कैंसर नहीं पेचिश से मरा
मुझसे जो हुए प्रारंभ
पराक्रम था अंत करना

यदि मन सम्यक हो जाए तुम्हारा
तुम स्वयं देख लोगी
मैं खारा सर्वहारा
मेरी फूहड़ ठगी

नेता

यह जो लोग,
    हमारी बात पूरी सुनते
    हमारे आकुल क्रोध सुलझ जाते
हमारे विरोध का सत्कार दिखा
    जो विरोध हटा देते
जो हमें मनाते हमारी बात नहीं मानते
हम ठगे हीन हुए लौटते
जिनका धीरज शांत सुनने का ढंग
    जीतने के लिए लम्बा व्यूह
बड़े आत्म का गुण नही
    एक टैक्नालॉजी कमाई कुशलता

वह सही है

वह सही है
      जो बाहर से आता
मैं गलत हूँ
      मुझमें कुत्ता भोंकता

वही सही है जो समक्ष
नियम से राहत चाहता
मैंने बाँधी उत्साह से
      कानून की गाँठ
जिसे यह कुतर रहा
उसका छोटा लोलुप
मेरे कानून को छेदता

जो भले थे

जो भले थे
वह अन्ततः पा ही गए
चिन्ताओं से छूट
समधुर जीवन

किस तरह
भगवान के हाथ ने उठाया
वह तो कर्त्तव्य में खड़े थे
पाना उनके लिए
ठीक समय उतर कर आया

साधारण सुख का सुख
इन हिचकिचातों ने पाया

सेनरु

(रूपांतर : मूल जापानी)

मेरे स्वप्नों में
    स्वदेश के लोग
कभी बुड्ढे नहीं होते

यात्रा में
    यात्रा से थका
मैं सोता ही रहता

केतली से भाप
    जैसे कोई हो
यहाँ मेरे पास

मैंने चूहों को
    मुरमुरा डाला
पर वह मौके देखते रहे

नाक
    सिर्फ नाक
नहीं हँस सकती

कील न निकली
    तो वापिस
ठोक दी गई

इस विश्वास में
कि कल होगा
सब सोने जाते

धान लगाने वाली औरत
बच्चे को सुलाने
गाती धान लगाने का गीत

मुक्त की चिड़िया
हर्ष-विभोर
पेड़ से टकराई

कुछ नहीं सूचित करता
झींगुर की तान में
कितनी जल्दी
वह मर जाएगा

एक वर्षा की बूंद
हृदय हिला देती

कुछ भय से देखता हूँ
उन आँखों को
जिनमें कोई प्रतिरोध नही

आदर्श
सब गए :
स्वप्न बच रहे।

वैतरणी की चौड़ाई
वही है
गरीब या अमीर के लिए



कई मौकों पर
मनुष्य नहीं दिखता
प्रकृति का मुखिया

एक पिस्सू
धर्म-दृढ़ स्त्री को
घाघरा खोलना पड़ा

वह गिनती है
अपनी शिकायतों में
यह मच्छरों से खाया जाना भी

मुनीम खजानची
धन से बिछुड़ता है जैसे
उसका अपना हो

चापलूसी गुणगान
कितनी वीभत्स
सोने के दाँत की चमक

जो कलह में जीता
उस रात
वह भी न सो सका

डाँटें खाने पर
वह पुस्तक पढ़ता
जो पिता नहीं पढ़ सकता

फर्स्ट डिविजन की आशा थी
थर्ड डिविजन ही निकली

हसते हुए भी
    नहीं भूलती
वह कैसा दिखती

रेजगारी न होने पर
    वह प्रार्थना करता
मंदिर के दरवाजे पर

इमारतें दिखलाते
    रिक्शेवाला
गर्व से फूलता है

शिष्टाचार अंत होने पर
    वह होता दुबारा
शीत दृष्टि वाला

ऊँचे दर्जे की ऊँघ है
किताब के साथ

विदूषक बादशाह का
चेहरा
    टैक्स आफिस में



सबसे ऊँची टहनी
    को विश्वास है
जड के छिपे जीवन पर

आती नाव ने
नदी में चन्द्रमा को
मोडा और सिकोड़ा



भाग्य का टीन

भाग्य का टीन

कविता की बजाए विलाप
कविता न लिख सकने का

प्रेम के लिए कोमल रहना
विश्व-विजय में खाल न बनना
पुलक न हो सके जिस मन में
ऐसा मृत जीवन क्या जीना

पड़ती रहे वर्षा
भाग्य का टीन बोलता
कुछ नहीं उग सकता

अड़ा जीवन

जीवन अड़ गया ऐसा
जो जिसे सुख दे सकता
नहीं दे सकता

गंभीरता से हारे
तो प्रफुल्लता भी गई

मैं घट गया
मेरी छाया प्रकट हो गई
मेरा विषैला भाग
आगे बढ़ आया

देना चाहता था
      सूक्ष्म समयातीत
करा दी
      कुरूपता से मुठभेड़

इतना संवाद
      दो तीन महीने
अब मूकता
      कोई बात नहीं

जादूगरनी, स्त्री, देवि

सौ जादूगरनियाँ मर
एक स्त्री
और सौ स्त्रियों पर बनती
एक शुभ्र देवि

स्त्री में जादूगरनी रहती
देवि में दोनों
जादूगरनी और स्त्री
जादूगरनी में झूठी माया
स्त्री होने की
देवि जैसे रूप-शृंगार भी कर सकती

नया वर्ष

पिछला वर्ष दुबक कर गया
कुछ नया न लगा यह वर्ष नया
कल जहाँ छोड़ा था मन
वहीं से उदय हुआ आज
जहाँ तक पहुँचा था वहीं से बढ़ा जीवन
कोई पंख नहीं लगे
न मन में गीत आया
जिसमें कल व्यक्त किए विचार
वही गद्य बोल रहा हूँ आज

अन्त-खेल

कोमलताहीन जीवन मेरा
कुछ सूक्ष्म कुछ स्मृति के सुख वचे
इस अन्त-खेल में
        कहाँ बुलाना तुम्हें

□

क्या मेरी सही उम्र है
        जो कल तक लगती थी
या तुम्हारे जाने के पश्चात
        जो लगने लगी

गिलहरी

उम्र बढ़ी
  भीड़ छटती गई
जीवन है यात्रा अकेली
  यह बात सिद्ध होती गई

यदि आत्मा ने छुआ
तो बनेगा पुल
नहीं तो टकराहट यही
  सदा सदा

जीवन वृक्ष की गिलहरी
  छोटी-सी छिपी हुई
अभी कभी प्रत्यक्ष होती
  कहीं चली गई

कवि

कवि तो हूँ पूरा
पुरुष शायद अधूरा
मन नहीं गृहस्थ
पराक्रम के लिए
संसार में हूँ
बाकी संसारिकता अस्त

इतने दिन भटकी खोई
तुम्हें देख और पहचान
मेरी कृश कठोर कविता
मधुर प्रदेश में उदय हुई

असमंजस-ग्रस्त

कलम और कागज
खालीपन भीतर-बाहर

आती है एक ही साधना
कविता से मन को खोजना

कोई मिला नही रत्न
विफल मेरे सारे प्रयत्न

हृदय में बोलने वाला आश्वस्त
आजकल असमंजस-ग्रस्त

कर्म

जो मुझे मिलना है प्रेम
रुका रहेगा मेरे पहुँचने तक
जो मुझे मिलना है धन
जो दुख आना है मुझ पर
आगे नहीं बढ़ेगा

जानवर पद्धति में
अराजक मिलना खोना
मनुष्य धर्म से चलते
कर्मों का आवश्यक घटना

घेरा

चुप हो गया
घर और दफ्तर में
अब मैं मैं मैं
कहाँ निकालें

चुप बैठे रहो
डर रहे है लोग
चुप बैठे रहो
और संगीन काम करो

ओंकार

जब हृदय में था
प्रेम का ओंकार
विश्व दिखता था
उसमें लय

अब बुद्धि जान पहिचान
मुझे जगह दे चुकी
हूँ हृदय में ही
पर बहुत नही

लँगड़ाना छोड़ो

लँगडाना छोड़ोगे नही
तो सीधे चलोगे कैसे
हकलाने का हक
    बिना त्यागे
कैसे बोलोगे

कामना का विघ्न
या प्रेम पवित्र
कभी रोग कभी स्वास्थ्य
चढाते उतारते

माँगना छोडो हृदय
मिलेगा
या कमी का भाव घटेगा

भ्रष्ट साधना

संसार का विरोध
परिस्थिति से प्रतिशोध

कुछ लोगों से छूटने
विमुख हुआ उनके मूल्यों से

वह पीछे रह जाएँ
मैं आगे गया इसलिए

अपवित्र मंत्रणा से मैंने
प्रयास किया
दिव्य के चरण छूने

दुख से घबरा
    सुख छोड़ा
इसलिए चोरी से लौटा

पर मुझे छुआ
    उस सत्य ने
जिसे कपट में वरा

एक जीवन से कूद जाने
इच्छा थी अवश्य
पर घिरे मन के व्यूह सुलझाने
    मिला ज्ञान का तरस

भाग्य भाग

हर जगह, भाग्य
तुम अपना भाग हटा
दिखला देते मेरा पराक्रम
कितना कम
तुम्हारे विना मैं कुछ भी नही
धक्के से चलता खिलौना
मेरी सफलता तुम्हारा वरदान
मेरी तपस्या सूझबूझ आगे बढ़ना
कुछ नहीं तुम्हारे सहयोग विना

भाग्य के चट्टे बट्टे
कभी तराजू पर चढ़े
कभी हटाए गए

हम पहुँचे तो ऊपर
कश्मीरी पडित गुण में हल्के
जल्दी उतारे गए

छोड़ो

छोड़ो पाने खोने निखर जाने की बातें
आगे बढ़ने धन बढ़ाने की घातें
इच्छाएँ पा मुटापा बढा
जो आया वह गया
अस्वास्थ्य अटका मृत्यु बाकी

अंतिम साथी अहं

जीवन का लम्बा पथ
अहं ही साथ चलता

यही साथी प्रिया
सब कुछ सहता

परिष्कृत करना अहं
इसलिए धर्म प्रथम

अहं नही तेरा मुख
न भूख न सुख
अंधा बहरा
जल्दी होता।
बहुत बोलता

अहं नही कुछ दिया-हुआ
कभी उज्जवल कभी काला
एक कमरा
किसे ठहराया

अहं है दम
पत्थर तोड़ने बैठाया
या सत्य खोजने

अग्नि स्नान

उच्च मन रखना
दिन जाएँ कैसे ही

आत्मा में विश्वास
पताका फहराती

तुमसे मिलना है यहाँ
किसी भूमि पर नहीं

अग्नि स्नान को तत्पर
जल जाएँ अन्य आकर्षण

जीवन घटना चक्र
लाता ले जाता कुछ भी
प्रश्न पूछना अब
भाग्य से एक ही

रस कोष

प्रेम ने अवहेला मुझे
जीवन हुआ बाहरी
मैं दफ्तर का कर्त्ता
मृदु कोमल वसन्त
मुससे गया अजनबी

रस कोष धरती का
रस कोष हृदय के भीतर
छिप अदृश्य खो गया

2

प्रेम के पूर्व है
मन में प्रेम-नदी
और प्रेम-नदी में डूबना
यही बनाता
मुझे प्रेमी तुम्हें प्रियतमा

अक्षय रस

न मिले ऐश्वर्य
हीन होगा बुढापा
एक मंत्र एक नाद
मेरे पास अनाहत

मन पर झर चुका
प्रेम का अक्षय रस
बिलकुल सूखा नहीं कभी
हृदय भीज कर

पशु पाएगा मृत्यु
जो पशुओं के लिए नियत
तुमने प्रकट की
प्रेम की नदी
जो बहती और वही रहती
जिसमें स्नान देता मुक्ति